Marriage/ विवाह

मैंने अनेकों जन्म पत्रिकाओं में "चट मंगनी पट ब्याह" के योग को स्पष्ट चरितार्थ होते हुए देखा है, यानि दो या चार महीनों के अन्दर शादी भी हो जाती है। परन्तु ऐसी जन्म पत्रिकाओं की भी कमी नही जहां अपने अनुकूल जीवन साथी की तलाश में दो या चार वर्षों से अधिक का समय लग जाता है या बार–बार प्रयास करने पर भी विवाह की बात बनते–बनते रह जाती है। विवाह में विलंब का ज्योतिषीय कारण यह है कि अभी आपके लिए विवाह की अनुकूल दशा और गोचर आदि नही आया है या अभी ईश्वर की इच्छा नही है, क्योंकि **वास्तव में ग्रह विवाह में ईश्वर की उपस्थिति या आषीर्वाद का प्रतिनिधित्व करते हैं,** और इसी ईश्वरीय इच्छा को जानने के लिए हम ज्योतिष शास्त्र का सहारा लेते हैं, और ग्रह, नक्षत्रों और राशियों से संबंधित उपाय (मंत्र, जप, दान और व्रत आदि) करके ईश्वर की कृपा पाने या अपनी इच्छा की पूर्ति के लिए ईश्वर से प्रार्थना करते हैं। इसलिए यदि आपके विवाह में विलंब हो रहा हो तो अपनी जन्म पत्रिका का सूक्ष्म अध्ययन करवाकर ज्योतिषीय उपायों को श्रद्धा और विश्वास के साथ करें।

विवाह में देरी होने का एक बड़ा कारण मांगलिक होना भी है। मेरा अनुभव रहा है कि मांगलिक जातक का विवाह संस्कार (यदि मांगलिक दोष का उपचार नही करवाया गया है तो) 29, 31, 35 या 37वें वर्ष में होता है, इसके अलावा विवाह में विलंब के कई अन्य कारण भी हैं, जैसेः– यदि शनि (सभी 9 ग्रहों में सबसे धीरे चलने वाला ग्रह है, इसलिए विलंब का कारक या कारण है) का संबंध सप्तम्, सप्तमेश, शुक्र और वृहस्पति से निम्न वर्ग कुण्डलियों में अधिक से अधिक बनता है, और कोई शुभ योग न हो तो जातक का विवाह देर से होता है। जैसेः– लग्न कुण्डली, चन्द्र कुण्डली, सप्तमांश कुण्डली और नवांश कुण्डली आदि, इसके विपरीत शुक्र और वृहस्पति (यदि पीड़ित न हो तो) विवाह में होने वाले विलंब को दूर करते हैं।

एक व्यक्ति का प्रश्न, मेरा विवाह कब होगा? इस प्रश्न का समाधान इस प्रकार से होगा। वैदिक ज्योतिष शास्त्र के अनुसार आपकी जन्म पत्रिका में जिस समय लग्नेश, द्वितीयेश, सप्तमेश, सप्तमेश से संबंधित ग्रह या ग्रहों, सप्तम् भाव से संबंधित ग्रह या ग्रहों, वृहस्पति, शुक्र, शुक्र से संबंधित ग्रह या ग्रहों, शनि, महादशा स्वामी और अंतरदशा स्वामी, इन सभी ग्रहों का गोचर जब आपकी कुण्डली के लग्न, लग्नेश, दूसरे भाव, द्वितीयेश, सप्तम् भाव,

सप्तमेश, वृहस्पति, शुक्र, शनि, महादशा स्वामी और अन्तरदशा स्वामी के ऊपर से होगा या आपस में संबंध स्थापित करेंगे तो उस समय (यदि कोई ग्रह बाधा न डाल रहा हो तो) आपका विवाह होगा या आपको अनुकूल जीवन साथी मिलेगा।

यहां ध्यान रखने वाली बात यह है कि गोचरस्थ ग्रहों का जितना अधिक संबंध आपकी लग्न कुण्डली, चन्द्र कुण्डली, सप्तमांश कुण्डली और नवमांश कुण्डली के साथ होगा उतना अधिक और प्रभावशाली विवाह योग बनेगा। यदि शुभ ग्रहों, शुभ भावों द्वारा योग बनता है, तो विवाह संस्कार जल्दी होगा, इसके विपरीत यदि अशुभ ग्रहों (पापी ग्रहों), अशुभ भावों (6,8,12), से संबंध हों तो विवाह संस्कार में विलंब को दर्शाता है।

विवाह संस्कार, जीवन में एक बड़े परिवर्तन को लाता है। यदि आपके अनुकूल जीवन साथी मिल जाए तो दाम्पत्य जीवन सफल और आनन्दमय होता है। विवाह संस्कार सामाजिक व्यवस्था में आपके योगदान के साथ शय्यासुख, संतानसुख, भावनात्मक सुख, संबंधो का सुख और अनेकों प्रकार के सुखों से जीवन को भर देता है। इसके विपरीत यदि जीवन साथी अनुकूल नही है, तो दाम्पत्य जीवन में अनेकों प्रकार के मानसिक तनाव या विच्छेद आदि का सामना करना पड़ता है। यहां पर हम आपको वैदिक ज्योतिष शास्त्र की मदद से आपकी जन्म पत्रिका का सूक्ष्म अध्ययन करके आपके प्रश्नों के उत्तर के साथ–साथ आपके अंदर आत्मविश्वास की एक नई ऊर्जा को जगाना, दाम्पत्य जीवन के प्रति आपको आस्थावान बनाने का काम करते हैं, और एक आनंदमयी और सफल वैवाहिक जीवन जीने के लिए उपचार भी बताते हैं।

वैवाहिक जीवन को खुशहाल बनाने के लिए कुण्डली मिलान और मांगलिक दोष के अलावा अन्य कई बातों पर भी विचार करना चाहिए जैसेः– लड़के और लड़की दोनो की ही जन्म पत्रिकाओं में व्याभिचार योग, निःसंतान योग, अल्पायु योग आदि नही होने चाहिए, जबकि लड़के की जन्म पत्रिका में नपुंसक योग और लड़की की जन्म पत्रिका में विषकन्या योग आदि न होना। लड़का और लड़की में हमेशा ही उत्सुक्ता होती है कि मेरे भाग्य में प्रेम विवाह है या सामाजिक विवाह? इसलिए अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्नों में से एक यह है कि **क्या मेरी जन्म पत्रिका में एक सफल प्रेम विवाह का योग है?** प्रश्न का समाधान इस प्रकार से किया जाएगा।

लड़का और लड़की जो एक सफल प्रेम विवाह की ख्वाहिश रखते हैं, दोनो की ही जन्म पत्रिकाओं में ग्रहों और भावों का अध्ययन निम्न प्रकार से होगा। लग्न, लग्नेश, पंचम, पंचमेश, सप्तम्, सप्तमेश, नवम, नवमेश, एकादश और एकादशेश का लग्न कुण्डली, चन्द्र कुण्डली, सप्तमांश कुण्डली और नवमांश कुण्डली में बली यानि बलवान होने के साथ–साथ केवल किसी एक पापी ग्रह (शनि, मंगल, राहु या केतु) से प्रभावित होना, या शुक्र, वृहस्पति और राहु के बली यानि बलवान होकर उपरोक्त भावों और वर्ग कुण्डलियों से घनिष्ठता स्थापित करना, विशेष तौर पर मिथुन राशि, तुला राशि और मीन राशियों में अधिक से अधिक ग्रहों का होना। ग्रहों और भावों में संबंध जितना ज्यादा और बलशाली

होगा, प्रेम विवाह होने और उसके सफल होने की संभावना भी उतनी ही ज्यादा बढ़ती जाएगी।

विवाह हो जाना या प्रेम विवाह हो जाना, यह एक अलग बात है। महत्वपूर्ण बात तो यह है कि वैवाहिक जीवन में प्रेम, सामंजस्य, एक दूसरे की भावनाओं को समझना, सम्मान करना, और समर्पण की भावना रखना एक अलग बात है। ऐसा बहुत ही कम देखने को मिलता है कि दाम्पत्य जीवन में सामंजस्य की कमी या गृहस्थ जीवन में बाधाएं आदि न आएं क्योंकि प्रत्येक जातक के ग्रहों की महादशा, अन्तरदशा, प्रत्यन्तर दशा और ग्रहों का गोचर आदि में हमेशा बदलाव आता रहता है। कभी यह दशा और गोचर थोड़े समय के लिए होता है, और कभी एक लम्बे समय के लिए होता है। शुभ ग्रहों, शुभ भावों और शुभ योगों की दशा और गोचर आदि, वैवाहिक जीवन में आनंद और खुशियां दर्शाता है। जबकि अशुभ ग्रहों, अशुभ भावों और अशुभ योगों की दशा और गोचर सामंजस्य में कमी को दर्शाता है, और कलह या विच्छेद का कारण बनाता है, **वास्तव में कारण तो हमारे कर्म हैं, ये स्थितियां तो केवल प्रबल सम्भावनाएं इंगित करती हैं,** ऐसे समय वैदिक ज्योतिष शास्त्र की मदद से अशुभ ग्रहों और अशुभ गोचर की समय अवधि का पता लगाकर, उन ग्रहों से संबंधित उपाय आदि करके उनकी शुभता में वृद्धि करके और अशुभता को कम या न के बराबर करके एक बड़ा बदलाव लाया जा सकता है और उस कठिन समय को आसानी से निकाला जा सकता है। पति–पत्नी के बीच अनबन, असामंजस्य, कलह और विच्छेद आदि के निम्न ज्योतिषीय कारण हो सकते हैं। यदि निम्न योग केवल एक पति या पत्नी की जन्म पत्रिका में हों तो उन ग्रहों आदि का प्रभाव अधिक प्रबल और निर्णायक नही होता इसलिए किसी निर्णायक स्थिति तक नही पहुंचता। यदि पति–पत्नी दोनो की ही जन्म पत्रिकाओं के अनुसार अच्छा समय नही चल रहा है तो, वैवाहिक संबंध को बनाएं रखने के लिए अतिशीघ्र सुधार की जरूरत है जो वैदिक ज्योतिष शास्त्र की मदद से संभव हो सकता है।

1. शुक्र और वृहस्पति का नीच राशि में होना, वक्री, अस्त और शत्रु क्षेत्रिय होना।
2. शुक्र और वृहस्पति का जन्मपत्रिका के 6, 8 और 12वें भावों का स्वामी होना या इन भावों के स्वामियों के साथ किसी भी प्रकार का संबंध स्थापित करना।
3. पंचमेश, सप्तमेश और नवमेश का 6, 8 और 12वें भावों के साथ या इनके स्वामियों के साथ किसी भी प्रकार का संबंध स्थापित करना।
4. पति या पत्नी में से किसी एक का जन्मपत्रिका में मांगलिक दोष से पीड़ित होना और मांगलिक दोष का परिहार न होना।
5. लग्न कुण्डली के अलावा चन्द्र कुण्डली, सप्तमांश कुण्डली, नवमांश कुण्डली आदि में लग्न, लग्नेश, चतुर्थ, चतुर्थेश, पंचम, पंचमेश, सप्तम्, सप्तमेश, नवम और नवमेश आदि का पीड़ित होना।
6. दशाएं अनुकूल न होना आदि।

एक पति और पत्नी का प्रश्न, क्या हम दोनो का दाम्पत्य जीवन हर प्रकार से आनंदमय, संतुष्ट और खुशियों से भरा रहेगा? प्रश्न के उत्तर के लिये वैदिक ज्योतिष शास्त्र के अनुसार विचारणीय भाव, ग्रह आदि का अध्ययन कुछ इस प्रकार से किया जाएगा। दोनो की जन्म पत्रिकाओं में लग्न, लग्नेश, चतुर्थ, चतुर्थेश, पंचम, पंचमेश, सप्तम्, सप्तमेश, चन्द्रमा, चन्द्रमा से सप्तम् भाव, शुक्र, शुक्र से सप्तम् भाव और वृहस्पति पर विचार किया जाएगा, और यदि प्रेम विवाह किया है, तो एकादश भाव (क्योंकि पंचम भाव प्रेम का भाव है, और सप्तम् भाव विवाह का, इसलिए पंचम से सप्तम् एकादश भाव प्रेम विवाह का होता है) और भावेश पर भी विचार किया जाएगा।

उपरोक्त सभी ग्रह और भाव शुभता से भरे हुए होने चाहिए, जैसे भावों का शुभ कर्तरी योग में होना, भावों में शुभ ग्रह या शुभ ग्रहों से दृष्ट होना, सम्बन्धित सभी ग्रहों का शुभ, उच्च, स्वगृही, बली, (नीच, अस्त, वक्री या शत्रु राशि में न होना) दोनो की पत्रिकाओं में विवाह योग, संतान योग आदि का होना। यही सारा विचार जन्म पत्रिका के अन्य वर्ग कुण्डलियों से भी किया जाएगा। जैसेः– नवमांश कुण्डली विचार, सप्तमांश कुण्डली विचार आदि, साथ ही साथ पुरूष की जन्म पत्रिका से दूसरे भाव और स्त्री की कुण्डली से अष्टम भाव पर अध्ययन किया जाएगा। इन सभी अध्ययनों में जितने अधिक शुभ योग, शुभ भाव, शुभ ग्रह, शुभ दशा, शुभ गोचर आदि बनते जाएगें, उतना ही अधिक पति–पत्नी का दाम्पत्य जीवन आनन्दमय, संतुष्ट और खुशियों से भरा रहेगा।

मेरा जीवन साथी कैसा होगा? यानि उसका स्वभाव, रंग–रूप आदि कैसा होगा? यह प्रश्न हम चाहें या न चाहें हमारे मस्तिष्क में बना रहता है। एक साधारण ज्योतिषीय दृष्टि से आपकी जन्म पत्रिका के विभिन्न वर्ग कुण्डलियों जैसे लग्न कुण्डली, सप्तमांश कुण्डली और नवमांश कुण्डली के सप्तम् भाव और भावेश का किन राशियों और किन ग्रहों से संबंध है, उन राशियों और ग्रहों के गुण–धर्म के आधार पर आपके जीवन साथी का स्वभाव और रंग–रूप आदि के बारे में आसानी से सटीक पूर्वानुमान लगाया जा सकता है। केवल जीवन साथी के दृष्टिकोण से राशियों और ग्रहों के गुणधर्म और स्वभाव निम्न प्रकार से हैं।

मेष राशि– मिलनसार, अच्छी व्यावहारिकता, अति क्रूर, निडर, साहसी, उद्यमी, क्रियाशील, महत्वाकांक्षी, कठोर, सुन्दर और चंचल स्वभाव।

वृष राशि– क्षमाशील, व्यावहारिक योग्यता, अति सौम्य, शान्त, धैर्यवान, परिश्रमी, सुन्दर और विनम्र।

मिथुन राशि– विचारों की व्याख्या करने में चतुर, क्रूर, मिलनसार, विद्याप्रेमी, बुद्धिमान और गुणी।

कर्क राशि– त्यागी, मिलनसार, अति सौम्य, सुन्दर, भावुक, विवेकशील, दक्ष, गुणी और सरल स्वभाव।

सिंह राशि– अति क्रूर, बुद्धिमान, हाजिर जवाब, बातचीत करने में दक्ष और तीखा स्वभाव।

कन्या राशि– बहुत अच्छी मानसिक योग्यता, समझदार, दयालु, तर्कशील, चिन्ताशील, व्यावहारिक, अति सौम्य, मधुभाषी, और सुन्दर।

तुला राशि–बहादुर, निष्पक्ष, अति क्रूर, विद्वान और स्वाभिमानी।

वृश्चिक राशि– साहसी, सौम्य, तीक्ष्ण बुद्धि और दृढ़ इच्छा।

धनुराशि– क्रूर, न्याय पसन्द, स्पष्ट वक्ता, खुशमिजाज़, और बुद्धिमान।

मकर राशि– अभिमानी, झगड़ालू, गम्भीर और चिन्ताशील।

कुम्भ राशि– सुन्दर, प्रतिभावान, क्षमाशील स्वभाव, दयालु, शान्त प्रकृति, स्थिर स्वभाव और सहयोगी।

मीन राशि– विवेकशील, अधिक सौम्य, कल्पनाशील और दयालु स्वभाव।

ग्रहों के गुण–धर्म के आधार पर आपके जीवन साथी का स्वभाव और रंग–रूप आदि निम्न प्रकार का हो सकता है।

सूर्य– आकर्षक, क्रूर, घमण्डी, साहसी, फिजूलखर्ची और योग्य।

चन्द्रमा– आकर्षक, सुन्दर, शौकीन, मृदुभाषी, सौम्य और दयालु।

मंगल– क्रूर, नेतृत्वशक्ति और अभिमानी।

बुध– मजाकिया, शौकीन, प्रतिभाशाली और सौम्य।

वृहस्पति – धार्मिक प्रकृति, शिक्षित, सौम्य और समझदार।

शुक्र– आकर्षक रूप, सौम्य और विनोदी।

शनि– अड़ियल, प्रचण्ड, लोभी, दुष्ट और झगड़ालू।

राहु– भौतिकवादी और मतलबी।

केतु– घमण्डी, स्वार्थी, धार्मिक और अन्धविश्वासी।

इसी प्रकार आपके भी विभिन्न प्रश्न हो सकते हैं, ज्यादातर पूछे जाने वाले ये प्रश्न आपकी सुविधा के लिए दिये जा रहे हैं जैसेः–

क्या मेरा जीवन साथी मुझसे खुश और संतुष्ट रहेगा? (Will my life partner happy and satisfied with me?)

वैवाहिक जीवन को सफल, शांतिपूर्वक और खुशहाल बनाने के लिए मैं क्या करूं? (What should I do to make my married life peaceful, successful and prosperous?)

जीवन साथी को प्रसन्न करने के लिए मैं क्या करूं? (What should I do to keep my life partner happy ?)

हम दोनो पति–पत्नी अपना मानसिक तनाव कैसे दूर करें? (How can we husband & wife reduce our mental-tension?)

मनपसंद जीवन साथी पाने के लिए मैं क्या करूं? (What should I do to get a desired life partner?)

मेरे जीवन साथी का स्वभाव कैसा होगा? (What will be nature of my life partner ?)

क्या मैं मांगलिक हूं ? यदि हां, तो क्या करूं ? (Am I Manglik? If yes, then what should I do?)

मेरे विवाह में देरी का कारण क्या है और उसका उपचार क्या है? (What are the reasons for delay in my marriage and what are the remedies?)

क्या विवाह करने के लिए हम दोनो का यह समय ठीक है? (Is it the right time to get married ?)

क्या मेरे भाग्य में एक सफल प्रेम विवाह है? (Will I have a successful love marriage ?)

आदि।